

अरे! भक्ति के दीवानो- बात मेरी तो मानो  
 आँसू बह के ये कहने लगे हैं sssss  
 मंदिरों में साँप रहने लगे हैं ॥२॥

सेठ आये कार पर- संत खड़े द्वार पर  
 नोट पानी से- बहने लगे हैं-----  
 मंदिरों में-----

आय भरपूर है- सेवा बड़ी दूर है  
 महल श्रद्धा के बहने लगे हैं-----  
 मंदिरों में-----

हरि शर्म में गड़े- बिना वस्त्र के खड़े  
 जाल मकड़ी के पहिने लगे हैं-----  
 मंदिरों में-----

सेठ के मान पर- रेश करें दान पर  
 धन जुटाने में- सहिने लगे हैं-----  
 मंदिरों में-----

बात खेंसी कही- हँस के हमने सही  
 गम "श्री बाबा श्री" हँस के- सहने लगे हैं---  
 मंदिरों में-----